अष्टादशपुराण दर्पण

पण्डित ज्वाला प्रसाद मिश्र

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान

पुस्तकमिदं राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानस्य पुनर्मुद्रणयोजनायां प्रकाशितम्।

अष्टादशपुराण दर्पण

पण्डित ज्वाला प्रसाद मिश्र

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान
मानित विश्वविद्यालय
५६-५७, इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
जनक पुरी, नई दिल्ली-११००५८

श्रीः ।

अष्टादशपुराण दर्पण ।

ब्रह्माण्ड, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त्त, लिंग, वाराह, स्कन्द, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड, ब्रह्माण्डपुराणोंकी अध्याय क्रमसे पूरी कथा और उनपर विचार किया गया है ।

यजुर्वेदभाष्यकार, दयानन्दतिमिरभास्करके निर्माता तथा अनेक पुराणादि ग्रंथोंके अनुवादक भारतधर्म महामंडलके महोपदेशक मुरादाबाद निवासी विद्यावारिधि पंडित ज्वालाप्रसादजी मिश्रद्वारा निर्मित ।

भूमिका ।

भारतवर्षमें चारों वर्ण और चारों आश्रमोंकी रीति नीति विचार आचारकी सामग्री अष्टादश पुराण ही है । प्रायः इन्हींके द्वारा पुरातन वृत्त, सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरितका बोध होता है । इन पुराणोंके आख्यानोंसेही वेदार्थ भलीभाँतिसे जाना जाताहै लिखाभी है—"इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत् । बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति॥" इतिहास और पुराणोंसे वेदार्थका विस्तार करे, अल्पश्रुतसे वेद भय पाता है कि, यह मुझपर प्रहार करेगा,पुराणोंसे ही अपने पिता पितामह आदिका निर्मल मार्ग जाना जाता है,अनेक जातियोंकी उत्पत्ति, देशभेद, ज्ञान, विज्ञान, जगत्के भिन्न भिन्न विभागोंके भिन्न २ नियम यह सब पुराणोंसे ही जाने जाते हैं, पुराण इतिहासके न होनेसे एक प्रकार जगत् अंधकारमय समझा जासकता है,भारतवासियोंका तो इतिहास पुराणही परम धन है,उपासनाका भण्डार मुक्तिका द्वार पुराण ही है । पञ्चदेव उपासनाका विस्तार भगवदवतारकी विशेषता पुराण ही प्रतिपादन करते हैं । नवधा भक्ति ईश्वरके चरणोंमें प्रीति पुराणकथासे ही प्राप्त होसकती है । बहुत क्या; दोनों लोकोंका साधक पुराण ही है, संसारमें जिन २ विषयोंकी आप खोज करना चाहें, वह विषय एकमात्र पुराणोंमें ही मिल सकता है, जब ऐसा है तो ऐसा कौन पुरुष है जो पुराणोंपर श्रद्धा न करेगा ।

परन्तु कालक्रमसे संस्कृतविद्याका पठन पाठन न्यून होजानेसे उन पुराणोंका पठन पाठन श्रवण मनन बहुत न्यून होगया है, न्यूनही नहीं बरन् एक प्रकारसे अन्य विद्याओंके ज्ञाता संस्कृतविद्याशून्य अश्रद्धालु कुतर्की, पुराणोंके मर्म न जाननेवाले, असंस्कृतज्ञ पुरुषोंके अनुवाद देखकर पुराणोंमें अश्रद्धा और अनेक प्रकारकी शंका करने लगे हैं पुराणोंमें शंका और अश्रद्धा करानेमें दयानंदियोंने प्रथमकक्षाका पुरुषार्थ किया है,और करते जाते हैं परन्तु आश्चर्य है कि जब किसी समाजीको अपनी जातिकी खोज होती है तब पुराणोंकीही शरणमें आना पडता है ।

उपनिषदोंने पुराणको भी विद्यानिर्देश किया है, यह विद्या भी विना गुरुके पढे नहीं आसकती । गुरुद्वारा ही इस विद्याकी शंकाओंका समाधान होसकता है,गुरुद्वारा ही पुराणोंका रहस्य जाना जाता है, मर्मज्ञ पुरुषोंको ही शंकाका अवकाश नहीं रहता. उनके द्वारा पुराणविद्या जानकर अनुवाद करनेसे पढनेवाले निश्शंक होसकते हैं. यही विचारकर शंकासमाधान सहित मैंने अनेक पुराणोंकी भाषाटीका की है जिनसे पाठकोंको पुराणविद्या जाननेमें बहुत लाभ हुआ है ।

श्रीः ।

अष्टादशपुराणदर्पणकी विषयानुक्रमणिका ।

विषय.		पृष्ठ.
उपोद्घातप्रकरण	...	१
उपपत्तिनिर्णय	....	”
पुराणोंकी नित्यतामें वेदप्रमाण	...	२
पुराणकर्तृत्वनिर्णय	....	८
पुराणविषयमें डॉक्टर विलसन आदिकी सम्मति	...	१६
उनके लेखका खण्डन	...	१८
श्रीशंकरस्वामीके समयका निर्णय	...	२८
पुराणोंमें सांप्रदायिकता	....	३०
पुराणोंमें अवतारवाद और इसमें वेदोंकी साक्षी	...	३२
मत्स्यावतार प्रसंग	...	”
कूर्मावतार प्रसंग	...	३३
वाराहावतार प्रसंग	....	”
वामनावतार प्रसंग	...	३४
नृसिंहावतार प्रसंग	....	”
परशुरामावतार प्रसंग	...	”
कृष्णावतार प्रसंग	...	३५
वेदोंमें विष्णुका प्रसंग	...	”
वेदोंमें महादेवका प्रसंग	....	३७
वेदोंमें सूर्य प्रसंग	...	३८
वेदोंमें शक्तिप्रसंग	....	”
वेदोंमें गणेश प्रसंग	....	”

विषय.		पृष्ठ.
वेद और पुराणोंमें देवतत्त्व	...	३९
पुराण और वैदिक निबन्धका विचार		४०
पुराणोंकी उपासना	....	४३
किन पुराणोंमें कौन देवता वर्णित है		४५
अष्टादशपुराणोंका मुख्य उद्देश	....	४९
पुराणोंके विरोधका परिहार	....	”
अष्टादशपुराणोंके मतसे उनके नाम और श्लोकसंख्या	...	५१
१ ब्रह्मपुराण		**५२**
अध्यायक्रमसे कथासूची	....	”
ब्रह्मपुराणपर दूसरे पुराणोंसे विचार		६२
२ पद्मपुराण		**७५**
अध्यायक्रमसे कथा सूची	....	”
सृष्टिखण्डकथा सूची	....	”
भूमिखण्ड कथा सूची	...	७८
स्वर्गखण्ड कथा सूची	....	८१
पातालखण्ड सूची	....	८२
उत्तरखंड कथा सूची	...	८७
पद्मपुराणपर विचार	....	९६
नारदपुराणके मतसे कथा सूची	....	९९

व्रतफलमें यक्षलोकमें गमन, ११७ कार्त्तिकव्रतकी विधि, अश्वत्थ और वट व्रतविधि और उनकी विष्ण्वादि तुल्यत्व आख्यायिका ११८शनिवार भिन्न अन्यवारमें अश्वत्थ वृक्ष स्पर्श न करनेका कारण निर्देश, ११९ कार्त्तिक स्नान विधि और वायव्यादि चार प्रकारका स्नान कथन, १२० कार्तिकमें धेनु आदि देनेका महाफल, कार्त्तिक व्रतियोंको परान्न त्यागादि नियम और कार्त्तिकमें पूजादि विधि कथन, १२१ माघ स्नान और शूकरक्षेत्र माहात्म्य तथा मासावधि उपवासमें व्रतका विधान, १२२ शालग्राम शिलार्चन विधि और शालग्राममें वासुदेवादि मूर्तिका लक्षण, १२३ धात्री छायामें पिण्डदान प्रशंसा कार्तिकसे केतक्यादिद्वारा पूजा-विधि दीपदान विधि और तदाख्यायिका, १२४ त्रयोदश्यादि द्वितीया-पर्य्यन्त दीपावली दान विधि राजकर्तव्य और यम द्वितीया कथन, १२५ प्रबोधिनी माहात्म्य और उसके व्रतकी विधि, भीष्मपञ्चक व्रतविधि और कार्तिक महात्म्य श्रवण फल, १२६ विष्णुभक्तिका माहात्म्य और लक्षण और उससे हीनकी निन्दा, १२७ शालग्रामशिला पूजाका फल, १२८ अनन्त वासुदेवका माहात्म्य और विष्णुके स्मरणका प्रकार, १२९ जम्बू तीर्थस्थ सम्पूर्ण तीर्थ और उनका माहात्म्यका कथन, १३० वेत्रवती माहात्म्य, १३१ साभ्रमती और तत्तीरस्थ नीलकण्ठादि वृक्षोंका माहात्म्य, १३२ नन्दि और कपालमोचन तीर्थका माहात्म्य, १३३ विकर्ण तीर्थ श्वेततीर्थादिका माहात्म्य १३४ अग्नितीर्थ माहात्म्य और उस प्रसङ्गमें कुकर्दम राजाका आख्यान १३५ हिरण्यासंगमतीर्थ और धर्म्मावती साभ्रमती संगम उस प्रसंगमें माण्डव्याख्यान, १३६ कम्बु आदि तीर्थ माहात्म्य मंकितीर्थ माहात्म्यमें मंकि नामक ऋषि आख्यान, १३७ ब्रह्मवल्ली और खण्डतीर्थ माहात्म्य, १३८ संगमेश्वरतीर्थ माहात्म्य, १४१ चित्रांगवदन तीर्थ माहात्म्य, १४२ चन्दनेश्वर माहात्म्य, १४३ जम्बू तीर्थ माहात्म्य उस प्रसंगमें किराताख्यायिका, १४५ कण्व मुनिकन्या